RNI No. MPHIN/2015/64451 डाक पंजीयन क्र. MP/IDC/1525/2019-2021 IPT डाक द्वारा प्रेषण प्रति शुक्रवार indianplasttimes@gmail.com
www.Indianplasttimes.in

इंडियन प्लास्ट टाइम्स

■ INDORE ■ 18 MARCH TO 24 MARCH 2020 ■ प्रति बुधवार ■ वर्ष 05 ■ अंक 30 ■ पृष्ठ 8 ■ कीमत 5 रु.

Inside News

ओएनजीसी ने केजी ब्लॉक से गैस उत्पादन शुरू किया
Page 2

करीब 10% सस्ता हो गया गोल्ड, पर क्या है जो खरीदारी से रोक रहा?
Page 4

केवीबी एक लाभकर, सुपूंजीकृत बैंक है, जो ग्राहकों के लिए कड़ी प्रतिबद्धता रखता है
Page 5

editoria!

तकनीक में छलांग

भारत ने नए दौर की अत्याधुनिक तकनीक के विकास में काफी तत्परता दिखाई है, उसी का सुखद परिणाम है कि आज हम तकनीकी नवाचार के मामले में विश्व में चीन के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। कंसल्टेंसी फर्म केपीएमजी के 2020 ग्लोबल टेक्नॉलजी इंडस्ट्री इनोवेशन सर्वे के अनुसार आर्टिफशल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन और इंटरनेट ऑफ थिंग्स के क्षेत्र में नई खोजों और अनुसंधान के मामले में चीन के साथ भारत दूसरे नंबर पर पहुंच गया है। टॉप पर अमेरिका है। यही नहीं विश्व के प्रमुख टेक्नॉलजी हब में बंगलुरु टॉप टेन में पहुंच गया है। उसका स्थान नौवां है। केपीएमजी के अनुसार भारत में पिछले कुछ वर्षों में पूंजी के बढ़ते प्रवाह और शहरीकरण ने तकनीकी शोध और अनुसंधान के लिए उपयुक्त माहौल तैयार किया है। भारत में विशाल युवा आबादी का होना भी इसमें सहायक है। कुछ विशेषज्ञों की राय है कि अमेरिकी की हाल की कठोर वीजा नीति भारत और चीन के लिए सकारात्मक साबित हुई है। कई तकनीकी विशेषज्ञ इस कारण अमेरिका जाने से वंचित रह गए या उन्हें स्वदेश लौटना पड़ा और उन्होंने अपने देशों में बेहतर काम किए। वैसे भारत में पिछले कुछ समय से तकनीकी विकास का बेहतर माहौल बना है। केंद्र सरकार ने महसूस किया है कि अगर देश को विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना है तो उस तकनीक को अपनाना होगा, जो भविष्य में अहम भूमिका निभाने वाली है। इसी को ध्यान में रखकर कई योजनाएं शुरू की गईं जैसे डेटा पार्क, टाइड 2.0 टेक्नॉलजी इनक्यूबेशन एंड डिवेलपमेंट ऑफ आंट्रप्रनर्स, सीओई (सेंटर ऑफ एक्सलेंस) और डिजिटल इंडिया। गौरतलब है कि यह सर्वे दुनिया भर की टेक्नॉलजी इंडस्ट्री में काम कर रहे 800 बड़े विशेषज्ञों के बीच किया गया। उनमें से 37 फीसदी का मानना है कि जिस तरह से दूसरे देश तकनीकी नवाचार में लगे हैं, जल्दी ही सबसे बड़ा इनोवेशन सेंटर सिलिकन वैली से बाहर होगा। इस संदर्भ में उन्होंने सिंगापुर का उदाहरण दिया। वह टेक्नॉलजी हब के रूप में इस सर्वे में पहले स्थान पर रहा। पिछले साल वह सातवें स्थान पर था। यह सर्वेक्षण निश्चय ही हमारा मनोबल बढ़ाता है, लेकिन भविष्य की जरूरतों को देखते हुए अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। सिर्फ एक बंगलुरु और मुट्ठी भर तकनीकी संस्थानों के बूते यह कार्य संभव नहीं है। अभी भी कई तकनीकी खासकर इंजीनियरिंग संस्थानों का पाठ्यक्रम काफी पुराना है। उनके शिक्षक नए तकनीकी विकास से परिचित तक नहीं हैं। वे इंडस्ट्री की अपेक्षाओं को नहीं जानते। नतीजा यह होता है कि हमारे छात्र बस हाथ में डिग्री लिए भटकते रहते हैं। उन्हें न तो ढंग की नौकरी मिल पाती है और न ही वे किसी तरह का इनोवेशन कर पाते हैं। वर्तमान तकनीकी शिक्षा को अपग्रेड करने के साथ हमें स्टार्टअप्स पर भी ध्यान देना होगा। उन्हें हर तरह की मदद देनी होगी ताकि वे तकनीकी नवाचार में योगदान दे सकें।

फिर हुआ शेयर बाजार धराशायी

3 साल में पहली बार 29 हजार के नीचे पहुंचा

मुंबई। एजेंसी

देशभर में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों तथा टेलिकॉम कंपनियों पर बकाया एजीआर पर सुप्रीम कोर्ट के सख्त रुख का बुधवार को शेयर बाजार पर गहरा असर पड़ा और और सेंसेक्स तीन साल में पहली बार 29 हजार के नीचे बंद हुआ। बीएसई का सेंसेक्स 1709.58 अंकों (5.59%) की बड़ी गिरावट के साथ 28,869.51 पर बंद हुआ। नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) का निफ्टी 425.55 अंक (4.75%) फिसलकर 8,541.50 पर बंद हुआ। दिनभर के कारोबार में सेंसेक्स ने 31,101.77 का ऊपरी स्तर तथा 28,613.05 का निचला स्तर छुआ। वहीं, निफ्टी ने 9,127.55 का उच्च स्तर और 8,407.05 का निम्न स्तर छुआ। बीएसई पर 28 कंपनियों के शेयर हरे निशान पर तो महज दो कंपनियों के शेयर लाल निशान पर बंद हुए। वहीं, एनएसई पर कुल 44 कंपनियों के शेयरों में लिवाली और छह कंपनियों के शेयरों में बिकवाली देखी गई। सुप्रीम कोर्ट के फैसले से बैंकिंग कंपनियों के शेयरों पर सबसे ज्यादा असर पड़ा, क्योंकि इन बैंकों का टेलिकॉम कंपनियों पर भारी-भरकम कर्ज है। वहीं, कुछ आईटी कंपनियों के शेयरों में मामूली तेजी देखी गई।बाजार में बुधवार को बड़ी गिरावट में निम्नलिखित कारकों का योगदान रहा।

कोरोना वायरस के 150 मामले

देश में कोरोना वायरस की बढ़ती संख्या से निवेशकों की चिंता बढ़ गई है। कोरोना वायरस के कुल मामलों की संख्या 147 पर पहुंच चुकी है, जिनमें तीन लोगों की मौत हुई है, जबकि 14 लोग स्वस्थ हो चुके हैं।

एजीआर पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को हुई सुनवाई में टेलिकॉम कंपनियों तथा दूरसंचार विभाग को फटकार लगाई। कोर्ट ने कंपनियों द्वारा एजीआर के सेल्फ असेसमेंट पर सवाल उठाए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि किसकी इजाजत से टेलिकॉम कंपनियां सेल्फ असेसमेंट कर रही हैं। कोर्ट ने इसे कोर्ट की अवमानना करार दिया। कोर्ट की इस टिप्पणी के बाद बैंकिंग तथा टेलिकॉम कंपनियों के शेयरों में बड़ी गिरावट शुरू हो गई। बैंकों का टेलिकॉम कंपनियों पर बड़ा बकाया है और अगर वे दिवालिया होती हैं, तो इससे बैंकों का एनपीए बढ़ेगा।

विदेशी निवेशकों की पूंजी निकासी

विदेशी निवेशकों द्वारा शेयर बाजार से पूंजी की निकासी बरकरार है। अकॉर्ड फिनटेक के आंकड़ो के मुताबिक, मार्च में विदेशी निवेशकों ने शेयर बाजार से 38,188 करोड़ रुपये की पूंजी निकासी की है।

वैश्विक बाजारों में गिरावट

कोरोना वायरस को लेकर आर्थिक अनिश्चितता बढ़ने से वैश्विक बाजारों में भी गिरावट का दौर बरकरार है। ऑस्ट्रेलियाई बाजार में 6.4% की गिरावट से एशियाई बाजार के एमएससीआई में 1.4% की गिरावट दर्ज की गई है, जो 2016 के बाद सबसे बड़ी गिरावट है। जापान का निक्केई 0.2% फिसला। यूरो स्टॉक्स फ्यूचर्स में 4.5% की गिरावट आई है। एशिया में यूएस स्टॉक्स फ्यूचर्स में 3.7% की गिरावट आई है।

गिरते कच्चे तेल के भाव का भारत उठाएगा फायदा

50 अरब का लाखों टन करेगा स्टोर

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

कच्चे तेल का भाव मार्च के महीने में करीब 40 पर्सेंट तक लुढ़क गया है। भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल का आयातक है और यह जरूरत का 80 पर्सेंट तेल आयात करता है। भारत सस्ते तेल के इस मौके को गंवाना नहीं चाहता है और इसलिए उसने कच्चे तेल को ज्यादा से ज्यादा स्टोर करने का फैसला किया है।

50 अरब डॉलर की मांग

सूत्रों के हवाले से खबर है कि पेट्रोलियम मंत्रालय ने वित्त मंत्रालय से कच्चे तेल की खरीदारी के लिए 50 अरब रुपये की डिमांड की है। वह इस राशि से 8-9 क्रूड कैरियर खरीदने के बारे में सोच रहा है। भारत की कोशिश है कि वह इस मौके का फायदा उठाकर कम से कम 36 मिलियन बैरल तेल का स्टोर करे। इसके अलावा कोरोना के कारण सप्लाई में होने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए भी 5 मिलियन बैरल स्टोर करने की तैयारी चल रही है।

गुफाओं में तेल स्टोर करने की तैयारी

पिछले दिनों खबर आई थी कि सरकार ने ओडिशा और कर्नाटक में जमीन के भीतर पथरीली गुफाओं में कच्चा तेल जमा करने का फैसला किया है। नरेंद्र मोदी सरकार की कोशिश है कि आपात स्थिति में कच्चे तेल का भंडार खत्म न हो पाए। यहां 65 लाख टन कच्चा तेल जमा रहेगा।

30 डॉलर पर पहुंची कीमत

कच्चे तेल की कीमत पर गौर करें तो 1 मार्च को इसकी कीमत 45 डॉलर प्रति बैरल से ज्यादा थी। अभी यह 30 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। ओपेक (OPEC) और रूस के बीच होड़ जारी है। कोई भी देश उत्पादन में कटौती को तैयार नहीं है। सऊदी अरामको ने साफ-साफ कहा है कि वह अप्रैल में उत्पादन में और तेजी लाएगा और कीमत 25 डॉलर प्रति बैरल तक आ जाएगी।

कोरोना से शुरू हुआ तेल का खेल और लूट गया विश्व की सबसे महंगी कंपनी का खजाना

करीब आधी हुई कीमत

इस बीच सऊदी अरामको ने ऐलान किया है कि वह कच्चे तेल की कीमत को 25 डॉलर प्रति बैरल तक ले आएगी और इसके लिए वह प्रॉडक्शन बढ़ाने जा रही है। अप्रैल से कंपनी 13 मिलियन बैरल तेल रोजाना उत्पादन करेगी। दिसंबर में जब अरामको ने आईपीओ जारी किया था तब कच्चे तेल की कीमत 65 डॉलर के करीब थी जो घटकर 34 डॉलर प्रति बैरल तक आ गई है।

नई दिल्ली। एजेंसी

कोरोना ने पूरी विश्व की अर्थव्यवस्था को अपनी चपेट में ले लिया है। सप्लाई और चेन का खेल ऐसा बिगड़ा कि तेल की डिमांड काफी घट गई, जिससे कच्चे तेल की कीमत में भारी गिरावट आई है। रूस और सऊदी अरब इसे अपने लिए अवसर के रूप में देख रहे हैं और ज्यादा से ज्यादा बाजार पर कब्जा जमाने की होड़ में शामिल हो गए। डिमांड घटती गई, प्रॉडक्शन बढ़ता गया और कीमतें गिरने लगीं। तेल के इस खेल में विश्व की सबसे महंगी कंपनी सऊदी अरामको का खजाना लूटता दिख रहा है।

कमाई में जबरदस्त गिरावट का अनुमान

एक रिपोर्ट के मुताबिक साल 2019 में सऊदी अरामको की कमाई में जबरदस्त गिरावट आई है। इसकी कमाई 92 अरब डॉलर रहने का अनुमान लगाया गया है, जबकि 2018 में यह विश्व की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली कंपनी थी। 2018 में कंपनी की कुल कमाई 111 अरब डॉलर रही थी।

मार्केट पर कब्जा करने की होड़

जानकारी के मुताबिक, सऊदी अरामको रिजल्ट में इस बात का खुलासा नहीं करेगी कि कोरोना के कारण जब कच्चे तेल की डिमांड घटी तो ध्ध्ण्ं देश प्रॉडक्शन में कटौती को लेकर बैठक की, लेकिन इस बात पर सहमति नहीं बन पाई और तमाम देशों के बीच ज्यादा से ज्यादा मार्केट पर कब्जा करने का वार शुरू हो गया।

डिजिटल समस्याओं का समाधान देंगे डिजिटल एक्सपर्ट्स

'21 मार्च, शाम 5 बजे से रात 8 बजे तक' स्कूल एक्सपीरियंस सेंटर इंदौर'

आईपीटी नेटवर्क

इंदौर में जल्द ही डिजिटल एक्सपर्ट्स द्वारा डिजिटल वर्ल्ड की ताजा तरीन जानकारियां शेयर की जाएंगी। डिजिटल एक्सपर्ट मयंक बत्रा द्वारा स्कूल एक्सपीरियंस सेण्टर इंदौर में 'डिजिटल गॉसिप' सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। 3 घंटे तक चलने वाला यह कार्यक्रम 21 मार्च को शाम 5 बजे से रात 8 बजे तक आयोजित होगा। इस आयोजन में मुख्य अथिति के तौर पर 'राहुल भोंसले' को आमंत्रित किया गया है, जिन्हें 'राभो' के नाम से भी जाना जाता है। राभो एक प्रसिद्ध यूट्यूबर हैं, जो कई ब्रांड्स जैसे लाफिंग कलर्स आदि के साथ काम कर रहे हैं। अपने फनी वीडियोज के जरिए वह इंदौर के एक मशहूर यूट्यूबर के तौर पर अपनी अलग पहचान बना पाने में सफल रहे हैं। इस बारे में अधिक जानकारी देते हुए मयंक ने बताया कि, 'ये इवेंट एक इंटरएक्टिव प्लेटफार्म लाने के मकसद से आयोजित किया जा रहा है, जहां आप डिजिटल क्षेत्र के दिग्गजों से नई नई जानकारियां हासिल कर सकते हैं।'

इस इवेंट में शामिल होने वाले लोगों को गेट डिजिटल विथ मयंक के संस्थापक और ट्रेनर-इन-चीफ मयंक बत्रा और राभो के साथ नेटवर्किंग और हाई-टी के साथ अद्भुत जानकारियां हासिल करने का मौका मिलेगा। इसके अलावा डिजिटल गॉसिप में एक्सपर्ट्स की यात्रा, टिप्स एंड ट्रिक्स, ग्रोथ हैक्स आदि को लेकर वर्तमान में चली आ रही समस्याओं और भविष्य में होने वाले नए प्रयोगों को जानने का अवसर भी प्राप्त होगा। यह डिजिटल क्षेत्र में करियर तलाशने वाले युवाओं के लिए उनके दिग्गज रोल मॉडल्स के साथ गपशप करने का भी एक बेहतरीन अवसर साबित हो सकता है।

ओएनजीसी ने केजी ब्लॉक से गैस उत्पादन शुरू किया

नयी दिल्ली। एजेंसी

सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) ने बंगाल की खाड़ी स्थित सबसे महत्वपूर्ण कृष्णा गोदावरी बेसिन ब्लॉक से गैस का उत्पादन शुरू कर दिया है। कंपनी आने वाले सप्ताह में उत्पादन बढ़ायेगी। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। कंपनी के लिये उत्पादन बढ़ाने के लिहाज से यह क्षेत्र काफी महत्वपूर्ण है। केजी-डीडब्ल्यूएन- 98-2 यानी केजी-डी5 ब्लॉक रिलायंस इंडस्ट्रीज के उत्पादन के लिहाज से मंद पड़ते केजी- डी6 ब्लॉक से लगता हुआ क्षेत्र है।

अधिकारियों का कहना है कि कंपनी ने केजी- डी5 ब्लॉक से उत्पादन शुरू कर दिया है। वर्तमान में इस ब्लॉक से यह ढाई लाख घनमीटर प्रतिदिन का उत्पादन कर रही है। कंपनी उत्पादन बढ़ाने को लेकर अध्ययन कर रही है और अगले सप्ताह यह 7.50 लाख घनमीटर प्रतिदिन तक पहुंच जाने का अनुमान है। ओएनजीसी इस ब्लॉक में की गई तेल और गैस खोज से उत्पादन शुरू करने के लिये 5.07 अरब डालर का निवेश कर रही है। परियोजना से ढाई करोड़ टन तेल और 45 अरब घन मीटर गैस का उत्पादन होने का अनुमान है। अनुमान है कि इस क्षेत्र से अपने अधिकतम स्तर पर दैनिक 78 हजार बैरल तेल और डेढ़ करोड़ घनमीटर गैस का उत्पादन हो सकता है। नई तेल खोज लाइसेंसिंग नीति (नेल्प) के तहत प्राप्त इस ब्लॉक में कुल 34 कुओं की खुदाई होनी है। इनमें 15 से तेल उत्पादन, आठ से गैस का उत्पादन होगा जबकि 11 कुएं इनमें पानी का प्रवाह करने वाले होंगे।

कमजोर मांग के चलते कच्चे तेल के वायदा भाव में गिरावट

नयी दिल्ली। एजेंसी

कच्चे तेल का वायदा भाव बुधवार को 116 रुपये गिरकर 1,979 रुपये प्रति बैरल पर पहुंच गया। इस दौरान विदेशों में कमजोर रुख के चलते घरेलू बाजार में कारोबारियों ने भी अपने सौदे काटे। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) में मार्च डिलीवरी के लिए कच्चा तेल 116 रुपये या 5.54 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1,979 रुपये प्रति बैरल के भाव पर आ गया। इसमें 39,756 लॉट के लिए कारोबार हुआ। इसी तरह अप्रैल डिलीवरी के लिए कच्चे तेल की कीमत 96 रुपये या 4.42 प्रतिशत की गिरावट के साथ 2,077 रुपये प्रति बैरल के भाव पर आ गई। इसमें 6,242 लॉट के लिए कारोबार हुआ। विश्लेषकों के मुताबिक कमजोर मांग के चलते कारोबारियों के सौदे काटने के चलते कच्चे तेल के वायदा में गिरावट हुई। वैश्विक स्तर पर, वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट कच्चा तेल 0.82 प्रतिशत गिरकर 26.73 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया और ब्रेंट क्रूड 0.28 प्रतिशत फिसलकर 28.65 डालर प्रति बैरल हो गया।

वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट कच्चा तेल 17 साल के निचले स्तर पर

लंदन। एजेंसी

वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) कच्चा तेल का भाव करीब 25 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है। यह 2003 के बाद का न्यूनतम भाव है। कोरोना वायरस संकट से वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की मांग प्रभावित हुई है। इससे तेल की कीमतें घटी हैं। डब्ल्यूटीआई कच्चा तेल की दर 25.08 डॉलर प्रति बैरल तक गिरी और बाद में हल्के सुधार के साथ 25.55 डॉलर प्रति बैरल पर चल रही थी। यह मंगलवार के बंद स्तर से 5.19 प्रतिशत नीचे है। ब्रेंट नॉर्थ सी कच्चा तेल का भाव तीन प्रतिशत गिरकर 27.88 डॉलर प्रति बैरल रही।

जीएसटी परिषद को जीएसटी नेटवर्क से जुड़ी खामियों के जुलाई अंत तक दूर होने की उम्मीद

नयी दिल्ली। एजेंसी

माल एवं सेवाकर (जीएसटी) परिषद को उम्मीद है कि जीएसटी नेटवर्क में रिटर्न दाखिल करने में आ रही खामियों को 31 जुलाई 2020 तक दूर कर लिया जायेगा और नेटवर्क बिना किसी अड़चन के बेहतर ढंग से काम करने लगेगा। उल्लेखनीय है कि वित्त मंत्रालय ने पिछले दिनों जीएसटी नेटवर्क में करदाताओं को रिटर्न दाखिल करने में आ रही दिक्कतों को लेकर इन्फोसिस से नाराजगी जाहिर कि थी। मंत्रालय ने इन्फोसिस से इन खामियों को दूर करने के लिये कार्ययोजना के साथ प्रस्तुतीकरण देने को भी कहा था। इन्फोसिस ने ही जीएसटी नेटवर्क प्रणाली के लिये साफ्टवेयर तैयार किया है।

जीएसटी परिषद की शनिवार को यहां हुई 39वीं बैठक में इन्फोसिस की ओर से नंदन नीलेकणि ने जीएसटी नेटवर्क से जुड़े मुद्दों पर विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने जीएसटी नेटवर्क प्रणाली में सामने आ रहे मुद्दों के बारे में बताया और फिर उनके समाधान की योजना पर प्रकाश डाला। वित्त मंत्रालय की यहां जारी विज्ञप्ति के मुताबिक नीलेकणि ने परिषद को बताया कि जीएसटी नेटवर्क प्रणाली की क्षमता को मौजूदा डेढ लाख करदाताओं से बढ़ाकर तीन लाख करदाता करने के लिये हार्डवेयर खरीद प्रक्रिया

शुरू कर दी गई है। हालांकि, उन्होंने कहा कि कोविड- 19 की वजह से खरीद प्रक्रिया पर मामूली प्रभाव पड़ा है। जीएसटी नेटवर्क में रिटर्न दाखिल करने में आ रही दिक्कतों को दूर करने और नेटवर्क की क्षमता बढ़ाने के मामले में इन्फोसिस के चेयरमैन नंदन नीलेकणि खुद समूची परियोजना पर नजर रखेंगे। नीलेकणि ने इसको लेकर भी सहमति जताई है कि वह जीएसटी की सूचना प्रौद्योगिकी पर गठित मंत्री समूह की बैठक में अगले छह माह तक उपस्थिति होंगे और जब तक नई पहलों को अमल में नहीं ला दिया जाता है वह खुद अपने स्तर पर परियोजना की निगरानी करेंगे। जीएसटी परिषद ने विचार विमर्श के बाद कहा कि नंदन नीलेकणि जीएसटी परिषद की होने वाली अगली तीन बैठकों में उपस्थित होंगे और जीएसटी नेटवर्क की बेहतरी के बारे में लिये गये फैसलों पर क्रियान्वयन के बारे में परिषद को जानकारी देंगे। इसके साथ ही वह प्रौद्योगिकी संबंधी मुद्दों पर उपयुक्त निर्णय लेने में परिषद की मदद भी करेंगे। परिषद ने जीएसटी नेटवर्क के मामले में विभिन्न पहलों पर आगे बढ़ने के लिये इन्फोसिस को अतिरिक्त कार्यबल तैनात करने को भी मंजूरी दे दी। परिषद ने कहा कि अतिरिक्त हार्डवेयर की खरीदारी और कार्यबल नियुक्ति को जल्द से जल्द मंजूरी दे दी जायेगी। नीलेकणि ने इस अवसर पर कहा कि नई रिटर्न प्रणाली को सहज बनाने के काम को धीरे धीरे आगे बढ़ाया जायेगा। उन्होंने सुझाव दिया कि अनुपालन से जुड़े मामलों को पहले हल किया जाना चाहिये ताकि फार्म जीएसटीआर एक और फार्म जीएसटीआर 3बी के आपस में नहीं जुडने की वजह से कर चोरी और प्रणाली की गेमिंग की समस्या को तुरंत दूर किया जा सके।

वाणिज्यिक भवनों में बिजली बचत के नियम अनिवार्य कर चुके हैं उप्र समेत 15 राज्य : बीईई महानिदेशक

मप्र अधिसूचना जारी होने के अंतिम चरण में

नयी दिल्ली। वाणिज्यिक इमारतों को कम बिजली खपत वाला और ऊर्जा दक्ष बनाने की योजना ऊर्जा संरक्षण भवन संहिता (ईसीबीसी) को अब तक उत्तर प्रदेश और राजस्थान समेत 15 राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश अनिवार्य कर चुके हैं तथा दस राज्य इसे अधिसूचित करने की तैयारी हैं। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने यह जानकारी दी। बिजली मंत्रालय के अधीन आने वाला ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) राज्यों के माध्यम से इस योजना का क्रियान्वयन कर रह रहा है। इसके तहत इमारतों के डिजाइन और निर्माण इस रूप में किया जाता है जिससे जिससे बिजली की खपत कम-से-कम हो। बीईई के महानिदेशक अभय बाकरे ने 'भाषा' से बातचीत में कहा, '' लगभग सभी राज्य ईसीबीसी लागू करने के पक्ष में हैं। इसका कारण इससे होना वाला लाभ है।

अबतक 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने ईसीबीसी योजना को अनिवार्य बनाया है जबकि बिहार, मध्य प्रदेश जैसे 10 राज्य इस संदर्भ में अधिसूचना जारी करने के अंतिम चरण में हैं।'' जिन राज्यों ने ईसीबीसी को अनिवार्य बनाया है, वे उत्तर प्रदेश, असम, आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, केरल, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, ओड़िशा, राजस्थान, तेलंगाना, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, अंडमान निकोबार द्वीप समूह तथा पुडुचेरी हैं। वहीं बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखंड, सिक्किम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, तमिलनाडु, त्रिपुरा और गोवा इस योजना को अनिवार्य बनाने के लिये अधिसूचना जारी करने के अंतिम चरण में हैं। बाकरे ने कहा कि शेष राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश भी ईसीबीसी लागू करने को लेकर कदम उठा रहे हैं और अधिसूचना जारी करने के विभिन्न चरणों में हैं।

योजना के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा, '' ईसीबीसी के तहत इमारतों के डिजाइन बनाने के लिये तीन विकल्प होते हैं। पहले विकल्प में जहां 15 से 20 प्रतिशत की बिजली की बचत होती है, वहीं दूसरे और तीसरे विकल्प में क्रमशः 30 से 35 प्रतिशत और 40 से 45 प्रतिशत बिजली की बचत होती है। वहीं इस योजना को लागू करने में लागत 5 से 8 प्रतिशत बढ़ती है।'' ईसीबीसी से 2030 तक 125 अरब यूनिट बिजली बचत का अनुमान है जो 10 करोड़ टन कॉर्बन उत्सर्जन में कमी लाने के बराबर है। बाकरे ने बताया, '' इस योजना के दायरे में अभी उत्तर प्रदेश विद्युत नियामक आयोग (यूपीईआरसी) (लखनऊ), केके गेस्ट हाउस (बेंगलुरु), आईटीसी कोहिनूर (हैदराबाद), उन्नति बिल्डिंग (ग्रेटर नोएडा) और बेंगलुरु स्थित कर्नाटक पावर कॉरपोरेशन लि. (केपीसीएल) की इमारतों को लाया गया है।'' एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि आने वाले समय में हमारी योजना अधिक ईंधन खपत और उत्सर्जन करने वाले सीमेंट और इस्पात जैसे उद्योगों को ऊर्जा दक्ष बनाने की है। हम इस दिशा में काम कर रहे हैं। बीईई ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिये स्टार लेबलिंग, ईसीबीसी, पीएटी (परफार्म एचीव एंड ट्रेड) जैसी योजनाएं चला रहा है। ऊर्जा बचत के विभिन्न उपायों और कार्यक्रमों से चालू वित्त वर्ष में कम-से-कम 130 अरब यूनिट की बचत का अनुमान है।

इंडियन ऑयल की मिजोरम में एलपीजी सिलिंडर भरने का संयंत्र लगाने की योजना

आइजोल। एजेंसी

इंडियन ऑयल मिजोरम में एलपीजी सिलिंडर भरने का संयंत्र लगाने पर विचार कर रही है। कंपनी की योजना अगले वित्त वर्ष में पूर्वोत्तर क्षेत्र में 100 खुदरा आउटलेट को उन्नत बनाने की भी है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। कंपनी के मुख्य महाप्रबंधक जी. रमेश ने कहा कि सिलिंडर भरने के संयंत्र के लिये अभी मिजोरम की सरकार से बातचीत चल रही है। उन्होंने कहा कि 100 खुदरा आउटलेट को उन्नत बनाने के लिये 50 करोड़ रुपये का अनुमानित निवेश किया जाएगा।

करीब 10% सस्ता हो गया गोल्ड, पर क्या है जो खरीदारी से रोक रहा?

कोलकाता। गोल्ड के दाम पिछले 10 दिनों में 9 पर्सेंट से ज्यादा घटने के बावजूद इसकी खरीदारी सुस्त बनी हुई है। कोविड-19 महामारी के डर से ग्राहक बाहर निकलने से बच रहे हैं। गोल्ड का भाव 6 मार्च को चढ़कर 44,274 रुपये प्रति 10 ग्राम (बिना 3 पर्सेंट GST के) पहुंच गया था। हालांकि, मंगलवार को यह घटकर 40,195 रुपये प्रति 10 ग्राम (बिना GST) पर ट्रेड कर रहा था। दिल्ली में यह मंगलवार को 80 रुपये गिरकर 39,719 रुपये प्रति 10 ग्राम पर रहा।

कोरोना के चलते दुकानें बंददिल्ली और नेशनल कैपिटल रीजन (NCR) के ज्वैलरी आउटलेट्स में ग्राहकों की संख्या 50-60 पर्सेंट घटी है। पीसी ज्वैलर्स के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर आर के शर्मा ने बताया, 'कोरोना वायरस के चलते ज्वैलर्स की दुकानें बंद हैं। ऐसे में उनके पास सोना खरीदने का पैसा कहां से आएगा। हालांकि, अगर कोई गोल्ड में निवेश करना चाहे तो यह इसके लिए सही समय है।'

झावेरी बाजार में ठप कारोबार

झावेरी बाजार के बुलियन डीलरों ने बताया कि कारोबार ठप है। कुछ ही ज्वैलर खरीदारी के लिए आ रहे हैं। मुंबई की इंडिया बुलियन ऐंड ज्वैलर्स असोसिएशन के नैशनल सेक्रटरी सुरेंद्र मेहता ने बताया, 'झावेरी बाजार में बिजनस अपने सामान्य स्तर पर नहीं है। सड़कों पर भीड़ घटी है। कारोबार काफी सुस्त पड़ गया है। लोग घरों में रहना पसंद कर रहे हैं। वहीं झावेरी बाजार बंद होने की अफवाहों ने भी मुसीबतें बढ़ाई हैं। असल में सरकार की ओर से बाजार के दो गोल्ड मॉल बंद करने का आदेश मिला है।'

सबसे ज्यादा खपत वाले केरल में क्या हाल?

केरल के ज्वैलर्स ने भी बिक्री घटने की जानकारी दी है। लोग भीड़भाड़ वाली जगहों पर जाने से बच रहे हैं। देश में गोल्ड का सबसे अधिक कंजम्पशन केरल में होता है।

कैश पास रखना चाह रहे निवेशक

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मंगलवार को गोल्ड की कीमतों में गिरावट आई। ऐसा बाजार में पिछले दिन कीमती मेटल्स के भाव फिसलने के कारण हुआ। कोरोना वायरस के प्रकोप के बीच निवेशक बाजारों में ऐसेट बेच रहे हैं। वे अपना पैसा कैश के रूप में रखना चाह रहे हैं। स्पॉट मार्केट में मंगलवार को गोल्ड 0.2 पर्सेंट घटकर 1,511,30 डॉलर प्रति औंस पर आ गया था।

केवल शादी जैसे फंक्शन्स के लिए होगी खरीदारी!

बुलियन डीलर मुकेश कोठारी ने बताया कि ज्वैलर्स को सोने पर तीन-चार डॉलर प्रति औंस की छूट दी जा रही है। उन्होंने बताया, 'इसके बावजूद ग्राहक नहीं आ रहे हैं।' केरल की कल्याण ज्वैलर्स के चेयरमैन टी एस कल्याणरमन ने बताया कि केवल शादी जैसे आयोजनों के लिए खरीदारी होने वाली है। लोग बेवजह बाहर निकलने से बच रहे हैं। हालांकि, आने वाले सीजन में बिक्री बढ़ने की उम्मीद की जा सकती है। उन्होंने बताया कि पिछली दो-तीन तिमाहियों से गोल्ड की कीमतें स्थिर बनी हुई हैं। इस कारण कंज्यूमर्स के लिए यह आम बात हो गई है।

गोल्ड खरीदने का सही समय, पर नहीं बढ़ रही सेल

सस्ते दाम से आकर्षित होने वाले पूर्वी बाजार में भी बिक्री तेज नहीं हुई है। सेनको गोल्ड एंड डायमंड्स के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर सुवंकर सेन ने बताया कि यह गोल्ड खरीदने का सही समय है, फिर भी सेल्स नहीं बढ़ रही है। उन्होंने बताया, 'जब तक सोना खरीदना बहुत जरूरी नहीं हो रहा है, लोग स्टोर्स पर नहीं आ रहे हैं।'

मूडीज ने 2020 के लिये भारत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान घटाकर 5.3 प्रतिशत किया

नयी दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

रेटिंग एजेंसी मूडीज इंवेस्टर्स सर्विस ने कोरोना वायरस के अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर को देखते हुए 2020 के लिये भारत की आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान घटाकर मंगलवार को 5.3 प्रतिशत कर दिया। मूडीज ने इससे पहले फरवरी में कहा था कि 2020 में भारत की जीडीपी 5.4 प्रतिशत की रफ्तार से वृद्धि कर सकती है। हालांकि यह भी पहले के 6.6 प्रतिशत के अनुमान से घटाया गया था। एजेंसी ने कहा कि कोरोना वायरस का संक्रमण तेजी से फैलने का ठीक-ठाक आर्थिक असर होगा। प्रभावित देशों में इससे घरेलू मांग पर असर हो रहा है, आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो रही है तथा एक देश से दूसरे देश में होने वाला व्यापार घट रहा है। मूडीज ने कहा, ''ये व्यवधान जितना लंबा खिचेंगे, वैश्विक आर्थिक मंदी का जोखिम उतना अधिक होगा।'' एजेंसी ने 2021 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 5.8 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया। उसने कहा, ''कई सरकारों और केंद्रीय बैंकों ने वित्तीय राहत पैकेज, नीतिगत दर में कटौती, नियामकीय छूट समेत राहत के कई उपाय किये हैं, हालांकि वायरस के संक्रमण को रोकने के लिये उठाये जाने वाले कदम इन उपायों के असर को कम कर देंगे।''

पैन को 31 मार्च तक आधार से जोड़ना अनिवार्यः आयकर विभाग

नई दिल्ली। आईपीटी नेटवर्क

आयकर विभाग ने सोमवार को कहा कि आधार को पैन से जोड़ना अनिवार्य है और लोगों को इसके लिए निर्धारित 31 मार्च की निर्धारित समय-सीमा का पालन करने को कहा गया है। विभाग ने पिछले महीने कहा था कि अगर 31 मार्च तक स्थायी खाता संख्या को आधा से नहीं जोड़ा जाता है, यह (पैन) काम नहीं करेगा।

आयकर विभाग ने कहा, 'इस समयसीमा का पालन करें।' विभाग ने सोशल मीडिया पर दिए पोस्ट में कहा है, 'पैन को 31 मार्च से 2020 से पहले आधार से जोड़ना अनिवार्य है। आप इसे बायोमेट्रिक आधार सत्यापन के जरिए या फिर एनएसडीएल और यूटीआईटीएसएल के पैन सेवा केंद्रों पर जाकर कर सकते हैं।'

विभाग ने ट्विटर पर विडियो डालते हुए कहा कि यह आगे के लिए फायदेमंद है। विडियो में कहा गया है कि दो तरीके से यह काम किया जा सकता है। पहला, 567678 या 56161 पर संदेश भेजकर यह किया जा सकता है। संदेश यूआईडीआईपैन स्पेस 12 अंकों का आधार स्पेस 10 अंकों का पैन (UIDPAN12digit Aadhaar 10digitPAN) के प्रारूप में भेजा जा सकता है। दूसरा, विभाग के ई-फाइलिंग पोर्टल- www.incometaxindiaefiling.gov.in के जरिए पैन को आधार से जोड़ा जा सकता है। आधिकारिक आंकड़े के अनुसार 27 जनवरी तक 30.75 करोड़ पैन आधार से जोड़े जा चुके हैं। अभी 17.58 करोड़ पैन को आधार से जोड़ना बाकी है।

कोरोना वायरस के चलते रुकने लगी निर्यात ऑर्डरों की डिलिवरी : फियो

नयी दिल्ली। एजेंसी

कोरोना वायरस संकट का असर देश के निर्यात क्षेत्र पर दिखने लगा है। निर्यात संगठनों के संघ फियो के मुताबिक इसकी वजह से अंतरराष्ट्रीय खरीदार निर्यात ऑर्डरों की डिलिवरी रोकने के लिए कह रहे हैं। भारतीय निर्यात संगठनों के संघ (फियो) को अंदेशा है कि आने वाले दिनों में और अधिक खरीदार निर्यात ऑर्डरों की आपूर्ति रोकने के लिए कहेंगे। बाद में यह ऑर्डर रद्द भी हो सकते हैं। फियो के बयान के मुताबिक ज्यादा रोजगार देने वाला लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र इससे बुरी तरह प्रभावित होगा। मौजूदा रुख के हिसाब से वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में कालीन, हस्तशिल्प, परिधान, जूते, रत्न-आभूषण और समुद्री उत्पाद जैसे क्षेत्र में काम करने वाले लघु उद्योग पर इसका व्यापक असर होगा। फियो ने कहा, ''कोरोना वायरस का अभी तक भारतीय अर्थव्यवस्था पर असर नहीं पड़ा है, लेकिन निर्यात क्षेत्र को आहट महसूस होने लगी है। कई खरीदारों ने अगले निर्देश तक निर्यात

ऑर्डरों की डिलिवरी रोकने के लिए कहा है। हमारा अनुमान है कि आने वाले दिनों में ऐसे निर्देशों की संख्या बढ़ेगी। बाद में इन ऑर्डरों के रद्द होने का भी अंदेशा है।'' संघ ने इस संबंध में सरकार से कुछ कदम उठाने की मांग की है। संघ ने कहा कि सरकार को बैंकों से निर्यात कंपनियों के ऋण को फंसा कर्ज घोषित करने की अवधि को बढ़ाकर एक साल करने के लिए कहना चाहिए क्योंकि कारोबार कम रहने की वजह से कई निर्यातकों की लागत प्रभावित होगी और उनके द्वारा लिया गया ऋण फंसा कर्ज बन सकता है। इसके अलावा सरकार को लघु एवं मध्यम उद्योगों के लिए रेहन या जमानत के बिना ऋण सीमा को बढ़ाकर दो करोड़ रुपये तक कर देना चाहिए और सभी निर्यात संवर्द्धन योजनाओं को 31 मार्च 2021 तक के लिए बढ़ा देना चाहिए। फियो ने कहा कि सरकार को सभी निर्यातकों की नकदी स्थिति सुधारने के लिए तत्काल सभी निर्यात लाभ जारी कर देने चाहिए। उसका कहना है कि मौजूदा कोरोना वायरस से कई लघु एवं मध्यम उद्योगों के वजूद पर संकट आ गया है।

बिजलीघरों में कोयला भंडार अब तक के उच्च स्तर पर पहुंचाः कोल इंडिया

कोलकाता। देश में तापीय बिजलीघरों में कोयला भंडार बढ़कर अब तक के उच्चतम स्तर 3.95 करोड़ टन तक पहुंच गया है। कोल इंडिया के अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।अधिकारी ने कहा कि यह भंडार बिजलीघरों को 23 दिन तक चलाने के लिये पर्याप्त है। यह केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीईए) के 22 दिन के ईंधन भंडार की अनिवार्यता से अधिक है। उसने कहा, ''देश के तापीय बिजलीघरों में 11 मार्च की स्थिति के अनुसार कोयला भंडार बढ़कर 3.95 करोड़ टन तक पहुंच गया। यह 23 दिनों के लिये पर्याप्त है।'' अधिकारी ने कहा कि यह भंडार चालू वित्त वर्ष की शेष अवधि में और बढ़ने की संभावना है। उसने कहा, ''इससे पहले करीब चार साल पहले सीईए के निगरानी वाले बिजलीघरों में 3.914 करोड़ टन कोयला भंडार था।'' उस समय औसत दैनिक कोयला खपत 14.8 लाख टन था जो फिलहाल 17.6 लाख टन है। कोल इंडिया 125 तापीय बिजलीघरों को कोयले की आपूर्ति करती है। वहीं सीईए 134 बिजलीघरों पर नजर रखता है। अधिकारी ने कहा, ''कोयला भंडार के संतोषजनक स्तर पर होने के साथ गर्मियों के दिनों में बिजलीघरों में ईंधन की कमी नहीं होनी चाहिए।

केवीबी एक लाभकर, सुपूंजीकृत बैंक है, जो ग्राहकों के लिए कड़ी प्रतिबद्धता रखता है

इंदौर। आईपीटी नेटवर्क

करूर वैश्य बैंक को पिछले 104 वर्षों में भारतीय लोगों और भारतीय व्यवसायों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन वर्षों में, केवीबी ने अपने ग्राहकों को हमेशा सबसे पहले रखने की ख्याति प्राप्त की है। इसमें हमारे जमा ग्राहक शामिल हैं जिनके हितों को हमेशा उच्च स्तर के पूंजीकरण (उच्च पूंजी पर्याप्तता), विवेकपूर्ण नकदी प्रबंधन, उच्च गुणवत्ता वाले जोखिम प्रबंधन और निरंतर लाभप्रदता सुनिश्चित करके संरक्षित किया गया है। केवीबी को अपने निर्बाध लाभप्रदता और लाभांश भुगतान (स्थापना के बाद से दोनों) की अपनी विरासत को जारी रखने पर गर्व है।

पूंजीकरण का उच्च स्तर: केवीबी अत्यधिक पूंजीकृत है, इसकी पूंजी और जोखिम का भारित परिसंपत्ति अनुपात 10.875% की विनियामक आवश्यकता के विरुद्ध 15.87%1 है। निरंतर लाभप्रदता: केवीबी को पूरे 104 साल के इतिहास में निरंतर लाभप्रदता बनाए रखने का गौरव प्राप्त है।

यथेष्ट चल निधि: केवीबी यह सुनिश्चित करने के लिए एक रूढ़िवादी आधार पर अपने चल निधि का प्रबंधन करता है कि ग्राहक की जरूरतों को तुरंत पूरा किया जाए। इस दर्शन को ध्यान में रखते हुए, केवीबी का चल निधि कवरेज अनुपात (एक अनुपात जो एक निर्धारित अवधि के दौरान उपलब्ध चल निधि बनाम उपयोग को मापता है) 100% की नियामक आवश्यकता के विरुद्ध 306.23% 2 है। यह किसी भी दायित्वों को पूरा करने के लिए उच्च स्तर की चल निधि को इंगित करता है।

व्यवसाय वृद्धि: केवीबी, भारत में प्रस्तुत अवसरों का लाभ उठाते हुए, विवेकपूर्ण रूप से बढ़ता रहा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी में केवीबी के निवेश ने इसे मौजूदा ग्राहकों के साथ संबंधों को गहरा बनाते हुए नए ग्राहक खंडों को आकर्षित करने में सक्षम बनाया है। करूर वैश्य बैंक अपने ग्राहकों की सेवा करने की अपनी गौरवशाली परंपरा को जारी रखे हुए है। यह उच्च स्तर की पूंजी और चल निधि सुनिश्चित करते हुए और विवेकपूर्ण रूप से जोखिम का प्रबंधन करते हुए ऐसा करता है। केवीबी सभी प्रासंगिक मापदंडों में एक मौलिक रूप से मजबूत संस्थान है।

सैनेटाइजर-मास्क ही नहीं, ये चीजें भी हो रहीं मार्केट से गायब

बेंगलुरु। एजेंसी

कोरोना वायरस जैसे-जैसे भारत में पैर पसारता जा रहा है, बाजार में ढूंढने पर भी सैनेटाइजर नहीं मिल रहे। सैनेटाइज़र्स की किल्लत के बारे में आपने कई खबरें देख सुन ली होंगी। लेकिन सिर्फ सैनेटाइज़र और मास्क ही इन दिनों बाजार से गायब नहीं हो रहे हैं। किराना स्टोर्स से किचन का सामान और मॉल्स और मार्टो से रोज की जरूरतों का सामान भी साफ होता जा रहा है। पिछले कई दिनों में ई-कॉमर्स प्लैटफॉर्म्स, रिटेल चेन्स और किराना स्टोर्स की सेल्स अचानक बढ़ गई है, लोग कोरोना के डर के मारे जरूरत का हर समान घरों में भर रहे हैं।

अलग-अलग कैटिगरीज में पिछले कुछ दिनों में 15 से 45 फीसदी की सेल्स बढ़ी है। मॉल्स के जरूरी सामानों वाले शेल्फ तेजी से साफ हो रहे हैं। और तो और, ऑनलाइन भी सामान नहीं मिल रहा है, डिलिवरी में देरी हो रही है। हालांकि, रिटेलर्स और एफएमसीजी कंपनियों का कहना है कि माल की किसी तरह की शॉर्टेज नहीं है और दुकानों तक जल्द सप्लाई तेजी से पहुंचाई जाएगी। साथ ही, जमाखोरी न करने की अपील भी की जाएगी। मुंबई, दिल्ली-एनसीआर, बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद, कोच्चि, अहमदाबाद आदि प्रमुख शहरों में आलम यह है कि चावल, आटा, दाल, खाने का तेल, चीनी, बिस्किट, चायपत्ती, इंस्टैंट नूडल्स, बटर, फ्रोज़न फूड, साबुन, हैंडवॉश, फ्लोर क्लीनर आदि शॉप्स और मॉल्स से गायब हो गए हैं। ग्रोफर्स, फअयूचर ग्रुप, स्पेंसर्स रिटेल, ऐमजॉन और फ्लिपकार्ट के सेल्स एग्जिक्यूटिव्स का यही कहना है।

खाने-पीने और रोजमर्रा के इस्तेमाल की इन चीजों के अलावा, सैनेटाइजर्स, शहद, च्यवनप्राश, टॉइलट पेपर, टिशू पेपर, वेट वाइप्स आदि की सेल भी पिछले कुछ दिनों में काफी बढ़ गई है। ग्रोफर्स के सीईओ अलबिंदर ढींडसा ने कहा, 'असेंशल कमॉडिटीज को लेकर हम भी सख्त रवैया अपना रहे हैं। कई लोग इनको खरीदने के लिए गेम कर रहे हैं लेकिन हम आगे बढ़कर उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे हैं और इस बात का ध्यान रख रख रहे हैं कि ये चीजें उन लोगों तक ही पहुंचें जिन्हें असल में इनकी ज्यादा जरूरत है।'

Volkswagen T-Roc एसयूवी भारत में लॉन्च

कीमत 19.99 लाख

नई दिल्ली। एजेंसी

Volkswagen ने बुधवार को भारतीय बाजार में T-Roc एसयूवी लॉन्च कर दी। इसकी एक्स शोरूम कीमत 19.99 लाख रुपये है। Volkswagen T-Roc भारत में CBU (कंप्लीट बिल्ट यूनिट, यानी पूरी तरह बनी हुई) के रूप में आएगी। इसे सिर्फ एक वेरियंट में पेश किया गया है, जो शानदार फीचर्स से लैस है। फोक्सवैगन की इस एसयूवी की बुकिंग फरवरी से शुरू है।

फोक्सवैगन टी-रॉक में 1.5-लीटर का पेट्रोल इंजन दिया गया है। यह इंजन 147 bhp का पावर और 240 Nm पीक टॉर्क जेनरेट करता है। इंजन 7-स्पीड DSG ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन से लैस है। यह एसयूवी 8.4 सेकंड में 0-100 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार पकड़ सकती है। इसकी टॉप स्पीड 205 किलोमीटर प्रति घंटा है।

फीचर्स

फोक्सवैगन टी-रॉक में एलईडी डेटाइम रनिंग लाइट्स, प्रोजेक्टर लेंस हेडलैम्प, पैनोरमिक सनरूफ, ड्यूल-टोन अलाय वील्ज, लेदर अपहोल्स्ट्री, ऑटो क्लाइमेट कंट्रोल, 8.0-इंच टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम और वर्चुअल कॉकपिट जैसे फीचर दिए गए हैं। एसयूवी की लंबाई 4229mm और वीलबेस 2595mm, जिससे इसमें बेहतर कैबिन स्पेस मिलता है।

सेफ्टी

सेफ्टी के लिए टी-रॉक एसयूवी में 6-एयरबैगस, ABS, ESC, फ्रंट-रियर पार्किंग सेंसर्स और टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम समेत अन्य फीचर दिए गए हैं।

सीमित संख्या में होगी उपलब्ध

फोक्सवैगन टी-रॉक कंपनी की इंडिया 2.0 प्रॉजेक्ट के तहत आई नई कार है। Tiguan AllSpace की लॉन्चिंग के बाद इस महीने फोक्सवैगन की भारत में यह दूसरी लॉन्चिंग है। यह सीमित संख्या में उपलब्ध होगी। मार्केट में इसकी टक्कर जीप कंपस, एमजी हेक्टर, टाटा हैरियर, किआ सेल्टॉस और ह्यूंदै क्रेटा जैसी एसयूवी से होगी।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर क्या होगा कोरोना वायरस का असर?

नई दिल्ली। एजेंसी

दुनियाभर में तेजी के साथ फैल रहे घातक कोरोना वायरस ने वैश्विक अर्थव्यस्था को बुरी तरह से प्रभावित किया है। इसके चलते वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग और आपूर्ति दोनों पर असर पड़ा है। कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच दो महीने पहले उच्चतम स्तर पर रहने वाला स्टॉक मार्केट में आज 20 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आ चुकी है। तेल की बढ़ी आपूर्ति और मांग में कमी के बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की तरफ से कोरोना पर 24 जनवरी को हुई पहली बैठक के बाद से अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में 50 फीसदी की गिरावट आ चुकी है। कोरोना का दुनिया के व्यवसायों पर असर साफतौर पर देखा जा सकता है, जहां कंपनियां अपने ऑपरेशंस कम कर रही हैं, कर्मचारियों से यह कहा जा रहा है कि वे घरों से काम करें और उत्पादन के लक्ष्य को कम किया जा रहा है।

ऑर्गेनाइजेशन फॉर इकॉनोमिक को-ऑपरेशन एंड डेवलपमेंट (ओईसीडी) ने अंतरिम आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट में मार्च के पहले हफ्ते में कोविड के चलते वैश्विक जीडीपी में 50 बेसिस प्वाइंट (2019 में 2.9 प्रतिशत से 2.4 प्रतिशत) का अनुमान लगाया है। 100 बेसिस प्वाइंट एक प्रतिशत प्वाइंट के बराबर है। एशियन डेवलपमेंट बैंक ने मार्च के पहले हफ्ते में जारी प्रेस रिलीज में यह कहा कि कोरोना का विकासशील एशियाई अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर होगा। इसने अनुमान लगाया कि कोरोना से दुनिया की अर्थव्यवस्था को 77 बिलयन डॉलर से 347 बिलयन तक यानि वैश्विक जीडीपी का 0.1 प्रतिशत से 0.4 प्रतिशत तक का नुकसान हो सकता है।

गोल्डमेन सैच्स की रिपोर्ट (फरवरी के आखिरी हफ्ते में जारी) के अनुसार, कोरोना वायरस के चलते चीन की अर्थव्यवस्था में रुकावट आने के बाद 2008 में आई आर्थिक मंदी के बाद अब तक का बड़ा वस्तुओं की मांग को लेकर यह झटका है। जेपी मॉर्गन की रिपोर्ट के मुताबिक, उसके चीफ ग्लोबल स्ट्रेटजिस्ट डॉक्टर डेविड केली ने बताया कि सामाजिक तौर पर दूर रहने का असर साल 2020 के दूसरे क्वार्टर में देखा जाएगा। रिपोर्ट में यहा कहा गया- 'सोशल डिस्टेंशिंग के बाद समुद्री पर्यटन, एयर लाइंस, होटल्स, कसिनो, खेलों को कार्यक्रम, मूवीज, थिएटर्स, रेस्टुरेंट और अन्य उद्योगों पर होगा।' उन्होंने अंदेशा जताया का इसका अमेरिका समेत दुनियाभर की अर्थव्यवस्था पर सीधा असर होगा और आने वाले महीने में कई लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ेगा।

ऑनलाइन भुगतान सुगम बनाने वाली 'एग्रीगेटर' कंपनियों का नियमन करेगा आरबीआई

मुंबई। एजेंसी

रिजर्व बैंक ने कहा है कि वह ऑनलाइन भुगतान को सुगम बनाने वाली 'पेमेंट एग्रीगेटर' (पीए) कंपनियों का नियमन करेगा। ऑनलाइन भुगतान खंड में इन मध्यस्थों के महत्वपूर्ण कार्य को देखते हुए यह कदम उठाया जा रहा है। पीए ऐसी इकाइयां हैं जो ई-वाणिज्य कंपनियों तथा व्यापारियों को ग्राहकों से भुगतान बाध्यताओं को पूरा करने के लिये विभिन्न भुगतान उत्पादों को स्वीकार करने की सुविधा देता है। आरबीआई ने कहा, ''इस बारे में मिली प्रतिक्रिया और ऑनलाइन भुगतान खंड में इन मध्यस्थों की महत्वपूर्ण भूमिका और कोष प्रबंधन को देखते हुए यह इकाइयों की गतिविधियों का नियमन करने का निर्णय किया गया है।''

इस सृष्टि के जनक एक हैं। वह हैं अनंत सत्ता। वह अनेक रूपों में प्रकट होते हैं, लेकिन हैं वह एक ही। हम उनकी संतान हैं। हम विभिन्न दृष्टियों से अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन मूल रूप से अलग नहीं हैं। न कोई हीन है, न कोई श्रेष्ठ है। सब समान हैं

सम्पूर्ण सृष्टि के आदि जनक हैं रुद्र

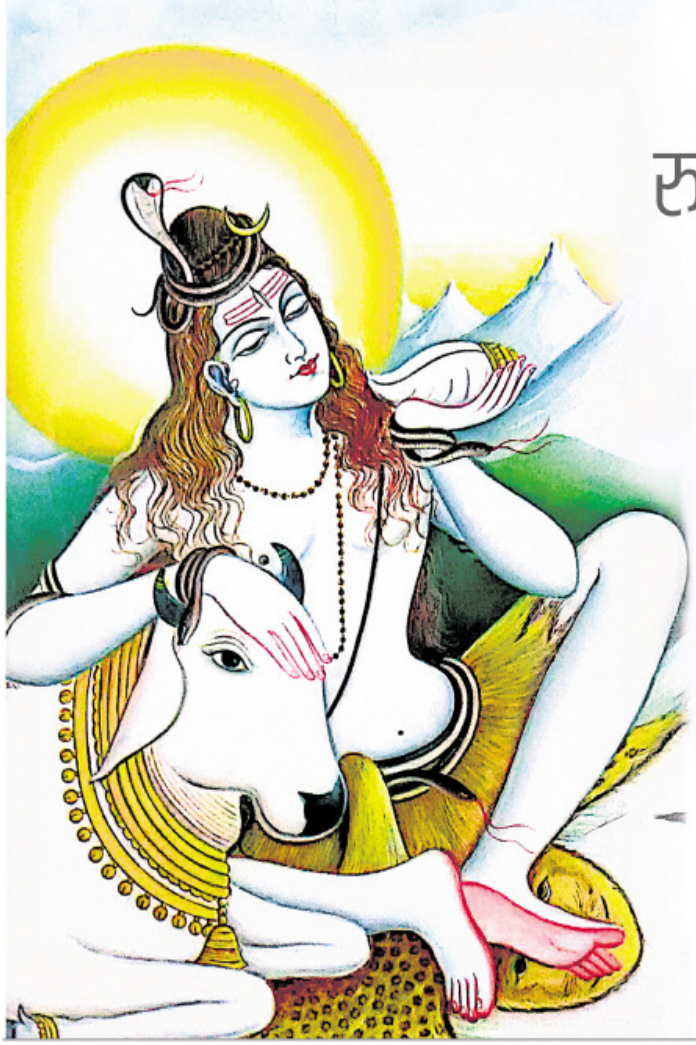

अध्यात्म

श्री श्री आनन्दमूर्ति

रुद्र ही सम्पूर्ण सृष्टि के आदि जनक हैं और सम्पूर्ण जीव उनके परिवार के सदस्य हैं। इस प्रकार जब परमपिता एक ही हैं, तो उनकी संतानों में विभिन्न कुल-गोत्र कैसे हो सकते हैं। तुम सभी समान हो, तुममें कोई हीन नहीं, कोई श्रेष्ठ नहीं है। जो मानव समाज में इस प्रकार का विभेद सृजन करते हैं, वे मानव समाज के शत्रु हैं। मूलतः तुम सभी एक ही हो। सभी सृष्ट यानी सृष्टि की सभी वस्तुओं की मूल सत्ता हैं रुद्र। विश्व ब्रह्माण्ड में मूल सत्ता हैं- परमपुरुष। मनुष्य का मन जब उस एक की ओर चलता है, तो उसे बुद्धि प्राप्त हो जाती है और अग्रबुद्धि प्राप्त हो जाने पर उस सत्ता का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। रुद्र का अर्थ है अनंत सत्ता। वैसे इसका शाब्दिक अर्थ है 'रुलाने वाला'।

किंतु परमपुरुष सबको केवल रुलाते ही नहीं हैं, वे उन्हें हंसाते भी हैं। तथ्य यह है कि दोनों ही प्रकार की परिस्थितियों में, चरम दुख की अवस्था में और चरम सुख की अवस्था में दोनों ही अवस्थाओं में आंखों में आंसू आ जाते हैं। शोक के अश्रु आंखों के मध्यवर्ती भाग से और आनन्द के अश्रु आंखों के कोने से गिरते हैं- यही अंतर होता है। एक माता उस समय भी रोती है, जब उसकी पुत्री ससुराल जाती है या वहां से वापस आ जाती है। पहली परिस्थिति में रुलाई दुख के कारण आती है और दूसरी परिस्थिति में रुलाई सुख के कारण आती है। परमपुरुष अर्थात रुद्र एक सफल नाटककार हैं। उनकी लीला जीवनधारा के सुख-दुख के ज्वार-भाटा से होकर सतत प्रवाहमान रहती है और वह इसी प्रकार चलती रहती है। जीव उनसे प्रार्थना करते हैं, 'हमें अंधकार से प्रकाश में ले चलो।' यहां यह अंधकार अविद्यामाया जनित अज्ञान है, जो सत्य के प्रकटीकरण में बाधा उत्पन्न करता है। जीव प्रार्थना करते हैं- 'हे परमपुरुष, हे रुद्र, सभी सत्ताओं में तुम्हारा ही अभिप्रकाश है, मैं तुम्हारे उस स्वरूप को अपने हृदय में देखना चाहता हूं।' जब मनुष्य उस ज्ञान को पा लेता है, तो फिर बिना एक भी क्षण रुके परमपुरुष की ओर दौड़ पड़ता है।

रुद्र ही गुरु हैं, रुद्र ही पिता हैं, रुद्र ही शिक्षक हैं और वे सब मिलकर एक ही हैं। इसीलिए कहा गया है कि रुद्र के पांच मुख हैं। इसका तात्पर्य क्या है? रुद्र एक ही हैं, किंतु व्यवस्था की दृष्टि से उनके पांच मुख हैं, उनके पांच प्रकार के दायित्व हैं। प्रत्येक का अपना कर्तव्य होता है। परमपुरुष ने चूंकि स्वयं को इस आपेक्षिक विश्व ब्रह्मांड में रूपान्तरित किया है, इसलिए उन्हें भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करना पड़ता है।

परमपुरुष ने सृष्टि की है, किंतु केवल बनाकर ही वे उसे छोड़ नहीं देते- उसकी सुरक्षा व्यवस्था भी करते हैं। उन्होंने अपनी ही शक्ति से सृष्टि भी की है और उसी से वे रक्षा भी करते हैं अर्थात शक्ति के साथ दायित्व बोध भी उनमें है। और सृष्टि का नियम है कि जहां शक्ति दी जाती है, वहां दायित्व भी दिया जाता है और यह भी कि जहां मनुष्य दायित्व का निर्वाह नहीं करते, वहां उनसे शक्ति छीन ली जाती है। रुद्र का दक्षिण मुख दक्षिणेश्वर कहा जाता है। उनका कर्त्तव्य होता है अपने बच्चों को समझाना, 'मेरे बच्चों ऐसा मत करो, ऐसा करने से मुझे दुख होगा।' यह एक मधुर आदेश, निर्देश होता है, जिससे वे अपनी संतानों की बुराई दूर करने का प्रयास करते हैं।

रुद्र का वामुख वामदेव कहलाता है। इस मुख से वे अपनी संतानों को डांटते हैं- तुमने ऐसा क्यों किया? मैं दंडित करूंगा। अपने इस कर्तव्य को संपन्न करने में परमपुरुष दंड देते हैं। दक्षिणमुख के बगल में जो मुख है, उसे कहते है ईशान। इससे वे कहते हैं, ऐसा करना मत, अन्यथा तुम दंड के पात्र बन जाओगे। इसमें धमकी नहीं होती, बल्कि होता है एक मधुर स्नेह। वाममुख के बगल में जो मुख है, वह है कालाग्नि। यह खूब डांट-फटकार करता है, किंतु दंड नहीं देता। परमपुरुष का जो मध्यवर्ती मुख है, वह है अप्रतिम सौंदर्यपूर्ण और गम्भीर भावमंडित। उसे कहते हैं कल्याण सुन्दरम्। परमपुरुष इस माध्यम से अपनी संतानों से ठीक उसी प्रकार का व्यवहार करते हैं, जिस प्रकार का व्यवहार माता-पिता अपने तीन-चार माह के बच्चे से करते हैं। माता-पिता इस बच्चे को हमेशा प्यार से देखते हैं। वहां दंड देने का भाव इंच मात्र भी नहीं रहता है। यह जो मध्यवर्ती मुख है, वही परमपुरुष रुद्रदेव का परमस्वभाव है। दक्षिण और वाममुख का उपयोग तो वे मात्र व्यवस्था हेतु विवशता से करते हैं। इसलिए भक्तगण रुद्र के दक्षिण मुख से प्रार्थना करते हैं कि तुम कृपा करना, जिससे मैं बुराइयों से तो विरत रहूं ही, दंड से भी विरत रहूं। भक्तगण प्रार्थना करते हैं कि 'हे रुद्र, तुम मेरे हृदय में प्रगट हो।' साधकगण साधना के माध्यम से अल्पकाल में ही अपने अनाहत चक्र में उसी कृपालु कल्याणसुन्दरम् रुद्र का अनुभव कर सकते हैं। परमपुरुष एक ही हैं और हमेशा कृपालु और दयामय हैं।

प्रस्तुतिः दिव्यचेतनानन्द अवधूत

दर्शन

अंदर की यात्रा से मिलेगी मंजिल

संत राजिन्दर सिंह

हम भूल गए हैं कि यह माया की दुनिया है। हम भूल गए हैं कि असलियत बाहर की दुनिया में नहीं, अंदर की दुनिया में है। हम भूल गए हैं कि जिस ध्येय से हम यहां आए थे, वह क्या है? बहुत से लोग यही सोचते हैं कि इस धरती पर आने का मकसद सिर्फ भौतिक वस्तुओं को पाना है। हम भूल जाते हैं कि यहां आने का सही मकसद इस दुनिया को पाना नहीं, बल्कि रूहानी दुनिया को पाना है, ताकि हम मंजिल तक पहुंच सकें और चौरासी लाख योनियों से छुटकारा पा सकें।

हम क्या करते हैं? हम रोजाना कर्म करते हैं- एक कर्म, दूसरा कर्म, तीसरा कर्म, चौथा कर्म। अध्यात्म के लिहाज से, चाहे कर्म अच्छा हो या बुरा हो, सभी बंधन का कारण हैं। हम यहां पर जैसे भी कर्म करें, चाहे वे बुरे हों, चाहे अच्छे हों, उनका फल हमें क्या मिलता है? हमें वापिस इस दुनिया में आना पड़ता है। पर इनसान यह बात समझ नहीं पाता, क्योंकि वह सोचता है कि मुझे यह जिंदगी मिल गई है, अब मैं इसमें कुछ करके दिखाऊं। दिखाना किसको है? अगर कुछ करना है, तो ऐसा करें, जो प्रभु को दिखा सकें।

प्रभु को दिखाने के लिए क्या करना है? भजन-अभ्यास, प्रभु के नाम का जाप। हम एक अच्छी जिंदगी जिएं, ताकि हमारे कदम तेजी से अपनी मंजिल की ओर उठने लगें। पर हम लोग क्या करते हैं? हम सोचते हैं, अपने भाई-बहनों को दिखाना है, अपने दोस्तों को दिखाना है, तो चलो! एक नई कार खरीद लें, मकान भी थोड़ा बड़ा सा ले लें, ताकि उनको लगे, हमारा काम बहुत अच्छा है। और इनसान ऐसी जिंदगी जीना शुरू कर देता है, जिसमें वह असलियत को जाने बगैर बाहर की दुनिया, जो फरेब की दुनिया है, के रंग में रंग जाता है। अगर हम ऐसा करेंगे, तो हम कैदी के कैदी रह जाएंगे। अगर इस कैद से निकलना है, तो फिर 'शब्द' के साथ जुड़ना होगा, अंदर से जागृत होना होगा। हमारे अंदर भरपूर रूहानी खजाने हैं। अगर हम अंदर की दुनिया में जाएंगे, तो उन खजानों को पाएंगे। जो कस्तूरी मृग होता है, वह कस्तूरी की खुशबू को सूंघता-सूंघता, कभी वहां भागता है, कभी यहां भागता है और भागते-भागते ही मर जाता है। उसे कभी यह अनुभव नहीं होता कि कस्तूरी की खुशबू उसके अंदर से ही आ रही है। अगर भीतर की ओर झांकेगा, तो उस खुशबू को पा सकेगा।

आस्था स्थली: सास बहू मंदिर, उदयपुर, राजस्थान

बिना पूजा-पाठ वाला कलात्मक मंदिर

राजस्थान के उदयपुर शहर के बाहरी छोर पर अत्यंत कलात्मक और ऐतिहासिक मंदिर है, जिसे सास बहू मंदिर के नाम से जाना जाता है। वैसे इसका असली नाम सहस्त्रबाहु मंदिर है। ग्यारहवीं सदी के आरंभ में बना ये मंदिर विकसित शैली और बेहतरीन अलंकरण के लिए जाना जाता है। मंदिर का परिसर 32 मीटर लंबा और 22 मीटर चौड़ा है।

मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के शासक महिपाल ने करवाया था। वह भगवान विष्णु का भक्त था। कहा जाता है कि उसने ये मंदिर अपनी पत्नी और बहू के लिए बनवाया। इसलिए इसका नाम तभी से सास बहू का मंदिर है। मंदिर ऊंचे जगत पर बना हुआ है। इसमें प्रवेश के लिए पूर्व में मकरतोरण द्वार है। मंदिर पंचायतन शैली में बनाया गया है। मुख्य मंदिर के चारों तरफ देवताओं का कुल बसता है। हर मंदिर में पंचरथ गर्भगृह, खूबसूरत रंग मंडप बने हैं। सास बहू यानी सहस्त्रबाहु मंदिर मूल रूप से भगवान विष्णु को समर्पित है। हजार हाथों वाले देवता वही तो हैं। परिसर में दूसरा प्रमुख मंदिर शिव का है।

इन मंदिरों में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम, कृष्ण, बलराम सभी विराजते हैं। प्रवेश द्वार पर मां सरस्वती की मूर्ति है। यह राजस्थान के अत्यंत प्राचीन मंदिरों में से एक है। मंदिर की दीवारों पर अंदर और बाहर खजुराहो के मंदिरों की तरह असंख्य मूर्तियां बनी हैं। इन मूर्तियों में कई कामशास्त्र से भी जुड़ी हुई हैं। कला प्रेमी इस मंदिर को घंटों निहारते हैं।

सास बहू मंदिर ने कई हमले झेले हैं। मंदिर का काफी हिस्सा हमले की भेंट चढ़ चुका है। फिर भी जितना हिस्सा बचा है, वह दर्शनीय है। 1226 में इल्तुतमिश के हमले के दौरान पहली बार नागदा शहर और सहस्त्रबाहु मंदिर तबाह हुआ।

खुलने का समय : यहां सूर्योदय से सूर्यास्त तक दर्शन के लिए पहुंचा जा सकता है। कोई पूजा पाठ इस मंदिर में नहीं होता। मंदिर की कलात्मकता को निहारने के लिए हर रोज विदेशी सैलानी भी पहुंचते हैं।

कैसे पहुंचें: उदयपुर शहर से सास बहू मंदिर की दूरी 20 किलोमीटर है। यहां निजी वाहन से ही आना श्रेयस्कर है। उदयपुर से नाथद्वारा के मार्ग पर एकलिंगी मंदिर से तीन किलोमीटर पहले यह मंदिर स्थित है।

अनादि अनत

10 लाख टन चावल के एक्सपोर्ट पर संकट

किसानों की आमदनी पर पड़ेगा असर

नई दिल्ली। एजेंसी

वैसे तो भारत ही नहीं दुनिया के सभी देशों में किसी न किसी शक्ल में कोरोना वायरस (Corona Virus) का असर दिखाई दे रहा है। कहीं बीमारी की शक्ल में तो कहीं कारोबार पर उसका असर दिखाई दे रहा है। अपने देश में चावल एक्सपोर्ट (Rice Export) पर कोरोना का बड़ा असर दिखाई देने लगा है। अगर अंदेशा सही निकला तो इसका सीधा असर देश से एक्सपोर्ट होने वाले 10 लाख टन चावल पर दिखाई देगा। बासमती चावल (Basmati Rice) की बात करें तो सबसे ज़्यादा ईरान (Iran) को भेजा जाता है। वहीं इसके टॉप 6 में से 5 खरीदार देश खाड़ी (Gulf country) के हैं। एग्रीकल्चर एक्सपर्ट के अनुसार एक्सपोर्ट थमने से देश में धान के भंडारन पर असर होगा। क्योंकि भारत हर महीने 10 लाख टन एक्सपोर्ट करता है।अगर एक से दो महीने तक एक्सपोर्ट थमा तो ज्यादा असर नहीं होगा। वहीं, इसकी अवधी बढ़ी तो व्यापारियों के साथ-साथ किसानों की आमदनी पर भी असर पड़ सकता है।

14 से 15 लाट टन बासमती ईरान को होता है एक्सपोर्ट

ऑल इंडिया राइस एक्सपोटर्स एसोसिएशन के कार्यकारी निदेशक विनोद कौल बताते हैं कि साल 2018-19 में ईरान को 14.5 लाख टन बासमती राइस एक्सपोर्ट किया गया था। हालांकि मार्च में कोरोना के चलते ईरान जाने वाले चावल पर इतना असर नहीं दिखाई दे रहा है। लेकिन अप्रैल में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि अब धीरे-धीरे वहां कोरोना का ज़्यादा असर दिखाई दे रहा है। सऊदी अरब में भी कई केस सामने आने के बाद वहां से भी कारोबार को लेकर कभी भी एडवाइजरी जारी हो सकती है। यहां हर महीने करीब 70 से 75 हजार टन बासमती राइस भेजा जाता है।

सभी तरह का 10 लाख टन चावल भारत से होता है एक्सपोर्ट

कौल बताते हैं कि खाड़ी देशों में सबसे ज़्यादा बासमती राइस एक्सपोर्ट होता है। लेकिन दूसरे देशों में 75 से 80 लाख टन गैर बासमती राइस भी एक्सपोर्ट होता है। मतलब हर महीने का 6 से 6.5 लाख टन चावल देश से जाता है। दोनों तरह के चावल मिलाकर यह नंबर करीब 10 लाख टन का हो जाता है। मार्च से तो असर दिखाई ही देने लगा है, लेकिन सबसे ज़्यादा परेशानी अप्रैल में आने वाली है। अगर जल्द ही कोरोना के संक्रमण पर काबू नहीं पाया गया तो दुनियाभर में कई तरह के ऐहतियात भरे कदम उठाए जाएंगे, जिसमे सबसे पहले होने वाली चीज यह है कि एक देश से दूसरे देश में आना-जाना रोक दिया जाता है।

कोरोना वायरस के प्रभाव से बीते पखवाड़े चीनी मिलों का उठाव घटा : इस्मा

नयी दिल्ली। घरेलू चीनी मिलों से बीते पखवाड़े में चीनी का उठाव घटा है। भारतीय चीनी मिलों के संगठन इस्मा के मुताबिक कोरोना वायरस महामारी संकट ने ना सिर्फ चीनी के उठाव बल्कि चीनी की वैश्विक कीमतों को भी 'अस्थायी' तौर पर प्रभावित किया है। भारतीय चीनी मिल संघ (इस्मा) ने एक बयान में कहा, "कोरोना वायरस महामारी के प्रभाव के चलते बीते पखवाड़े में चीनी मिलों से चीनी का उठाव घटा है। बाजार विशेषज्ञों के अनुसार चीनी के उठाव में जल्द सुधार होने की उम्मीद है क्योंकि इस दौरान थोक और खुदरा बाजार में उपलब्ध चीनी लगभग पूरी तरह बिकने की संभावना है। इसलिए इसका उठाव बढ़ना चाहिए जिससे चीनी मिलों को मदद हो सके और चीनी की कीमतें भी नियंत्रण में आनी चाहिए।" रपट के अनुसार कोरोना वायरस की वजह से पैदा हुई अभूतपूर्व स्थिति के चलते वैश्विक स्तर पर चीनी कीमतें प्रभावित हुई हैं। हालांकि यह स्थिति 'अस्थायी' हो सकती है।

इस्मा ने चीनी मिलों के उत्पादन के आंकड़े भी जारी किए हैं। घरेलू चीनी मिलों का उत्पादन 15 मार्च 2020 तक घटकर 215.82 लाख टन रहा। जबकि 15 मार्च 2019 तक यह 273.65 लाख टन था।चीनी वर्ष 2019-20 के दौरान अब तक पिछले उत्पादन में योग करने वाली मिलों की संख्या 70 कम है। पिछले साल इस समय तक 527 चीनी मिलों में पेराई हुई थी। इस साल 457 मिलों ने पेराई की। इस बार 15 मार्च तक 136 चीनी मिलों में पेराई रोकी जा चुकी थी और 321 चीनी मिलों में ही पेराई चल रही थी। पिछले साल इस समय तक 173 मिलें पेराई रोक चुकी थीं और 354 मिलों ने काम जारी रखा था। उत्तर प्रदेश में काम जारी रखने वाली 119 चीनी मिलों का चीनी उत्पादन 15 मार्च 2020 तक 87.16 लाख टन रहा। पिछले साल इसी अवधि में 117 मिलों ने 15 मार्च 2019 तक 84.14 लाख टन चीनी उत्पादित की थी।

महाराष्ट्र का चीनी उत्पादन 15 मार्च तक पिछले साल के 100.08 लाख टन से घटकर 55.85 लाख टन रहा। राज्य में 56 मिलें गन्ने की पेराई बंद कर चुकी हैं और मात्र 90 मिलें ही परिचालन में हैं। जबकि पिछले चीनी वर्ष में इस अवधि तक 101 मिलें बंद हो चुकी थीं और 94 परिचालन में थीं। रपट के अनुसार 15 मार्च 2020 तक चीनी मिलों ने 60 लाख टन के निर्यात कोटे में से 30 लाख टन चीनी का निर्यात किया है। इस्मा ने कहा कि थाईलैंड का चीनी उत्पादन पिछले साल के मुकाबले करीब 50 लाख टन तक घटा है। वहीं इंडोनेशियाई सरकार के ऑस्ट्रेलिया, थाईलैंड और भारत से छूट प्राप्त दरों पर चीनी आयात को अनुमति देने से भारत के लिए निर्यात बढ़ाने का एक बड़ा अवसर भी पैदा हुआ है।

कोरोना के कहर से फीकी पड़ी सोने-चांदी की चमक, 40 हजार से नीचे आया गोल्ड

इंदौर। कोरोना के कहर सराफा बाजार भी दबाव में दिख रहा है, सोने की कीमत 40 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम से नीचे पहुंच गई है। इसी तरह चांदी में भारी गिरावट है। सराफा व्यापारी संतोष वाधवानी ने बताया कि सोने-चांदी में अभी उतार-चढ़ाव बना रहेगा। भारतीय वायदा बाजार में अप्रैल गोल्ड फ्यूचर 40 हजार प्रति 10 ग्राम से नीचे चला गया है। हालांकि इसमें मंगलवार को थोड़ी मजबूती दिख रही है। कोरोना वायरस की वजह से अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने-चांदी की हाजिर कीमतों पर काफी दबाव है। सोमवार को हाजिर बाजार में सोना नवंबर के लेवल से करीब 5 फीसदी तक टूटकर 1,511.30 प्रति औंस तक पहुंच गया था। भारतीय सराफा बाजार में सोमवार को फिर बिकवाली के भारी दबाव में सोना 2,000 रुपये प्रति 10 ग्राम टूटा तो चांदी में 6,000 रुपये प्रति किलो से ज्यादा की गिरावट आई। सोने का भाव भारतीय सराफा बाजार में 40,000 रुपये प्रति 10 ग्राम से नीचे आ गया। वहीं, चांदी लुढ़ककर 36,640 रुपये प्रति किलो तक पहुंच गई।

कोरोना वायरस से निर्माण, परिवहन, रसायन विनिर्माण क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित : रिपोर्ट

नयी दिल्ली। एजेंसी

चीन में कोरोना वायरस संक्रमण से निर्माण, परिवहन और रसायन विनिर्माण क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत मुख्य रूप से कच्चे तेल और रत्न एवं आभूषण का आयात करता है। देश के कुल आयात में इनकी हिस्सेदारी 46 प्रतिशत है। चीन में आए संकट से ये दोनों क्षेत्र बचे हुए हैं। चीन के वुहान शहर से कोरोना वायरस संक्रमण 2019 के अंत में शुरू हुआ। अब तक यह 5,000 से अधिक लोगों की जान ले चुका है और दुनिया भर में एक लाख से अधिक लोग इससे संक्रमित हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि वायरस की वजह से मरने वालों की संख्या का आंकड़ा काफी ऊंचा है। बड़ी संख्या में लोग अभी इससे संक्रमित हैं। ऐसे में अभी इससे संघर्ष समाप्त नहीं हुआ है। यह वायरस अब सौ से अधिक देशों में फैल चुका है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इसे महामारी घोषित कर दिया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2018-19 में भारत के 507 अरब डॉलर के आयात में 26 प्रतिशत हिस्सा लौह एवं इस्पात तथा अजैवी रसायनों का रहा था। वायरस की वजह से इन क्षेत्रों पर सबसे कम असर पड़ा है। रिपोर्ट कहती है कि लौह एवं इस्पात क्षेत्र पर कोरोना वायरस का असर कम रहेगा क्योंकि भारत द्वारा चीन से इसका सिर्फ 11 प्रतिशत का आयात किया जाता है। भारत इसका सबसे अधिक आयात दक्षिण कोरिया से करता है। वहीं दक्षिण कोरिया अपनी जरूरत का 20 प्रतिशत चीन से आयात करता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अजैवी रसायन क्षेत्र पर भी इसका असर सीमित रहेगा। चीन से अजैविक रसायनों का आयात करीब 15 प्रतिशत है। इसमें कहा गया है कि पांच आयात उत्पाद ऐसे हैं जिनपर भारत काफी हद तक चीन पर निर्भर हैं। इनमें इलेक्ट्रिकल मशीनरी, मशीनरी और मेकेनिकल उपकरण, जैविक रसायन, प्लास्टिक और आप्टिकल तथा सर्जरी के उपकरण। देश के कुल आयात में इन उत्पादों का हिस्सा 28 प्रतिशत है।

राहत : रुपया डॉलर मुकाबले 26 पैसे मजबूत खुला

जानिए पिछले 10 दिनों के रुपये का क्लोजिंग स्तर

- मंगलवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 3 पैसे की कमजोरी के साथ 74.26 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- सोमवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 49 पैसे की कमजोरी के साथ 74.23 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- शुक्रवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 51 पैसे की मजबूती के साथ 73.74 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- गुरुवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 60 पैसे की कमजोरी के साथ 74.25 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- बुधवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 46 पैसे की मजबूती के साथ 73.65 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- सोमवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 39 पैसे की कमजोरी के साथ 74.11 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- शुक्रवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 38 पैसे की कमजोरी के साथ 73.72 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- गुरुवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 15 पैसे की कमजोरी के साथ 73.35 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- बुधवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 5 पैसे की मजबूती के साथ 73.20 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।
- मंगलवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 57 पैसे की कमजोरी के साथ 73.25 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।

नई दिल्ली। डॉलर के मुकाबले रुपया आज बुधवार यानी 18 मार्च 2020 को मजबूती के साथ खुला। आज डॉलर के मुकाबले रुपया 26 पैसे की मजबूती के साथ 74.00 रुपये के स्तर पर खुला। वहीं, मंगलवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 3 पैसे की कमजोरी के साथ 74.26 रुपये के स्तर पर बंद हुआ था।

आजादी के समय रुपये का स्तर

एक जमाना था जब अपना रुपया डॉलर को जबरदस्त टक्कर दिया करता था। जब भारत 1947 में आजाद हुआ तो डॉलर और रुपये का दाम बराबर का था। मतलब एक डॉलर बराबर एक रुपया था। तब देश पर कोई कर्ज भी नहीं था। फिर जब 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना लागू हुई तो सरकार ने विदेशों से कर्ज लेना शुरू किया और फिर रुपये की साख भी लगातार कम होने लगी। 1975 तक आते-आते तो एक डॉलर की कीमत 8 रुपये हो गई और 1985 में डॉलर का भाव हो गया 12 रुपये। 1991 में नरसिम्हा राव के शासनकाल में भारत ने उदारीकरण की राह पकड़ी और रुपया भी धड़ाम गिरने लगा।

डिमांड सप्लाई तय करता है भाव

करेंसी एक्सपर्ट के अनुसार रुपये की कीमत पूरी तरह इसकी डिमांड और सप्लाई पर निर्भर करती है। इंपोर्ट और एक्सपोर्ट का भी इस पर असर पड़ता है। हर देश के पास उस विदेशी मुद्रा का भंडार होता है, जिसमें वो लेन-देन करता है। विदेशी मुद्रा भंडार के घटने और बढ़ने से ही उस देश की मुद्रा की चाल तय होती है। अमरीकी डॉलर को वैश्विक करेंसी का रुतबा हासिल है और ज्यादातर देश इंपोर्ट का बिल डॉलर में ही चुकाते हैं।

पहली वजह है तेल के बढ़ते दाम

रुपये के लगातार कमजोर होने का सबसे बड़ा कारण कच्चे तेल के बढ़ते दाम हैं। भारत कच्चे तेल के बड़े इंपोर्टर्स में एक है। भारत ज्यादा तेल इंपोर्ट करता है और इसका बिल भी उसे डॉलर में चुकाना पड़ता है।

दूसरी वजह विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली

विदेशी संस्थागत निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजारों में अक्सर जमकर बिकवाली करते हैं। जब ऐसा होता है तो रुपये पर दबाव बनता है और यह डॉलर के मुकाबले टूट जाता है।

मोबाइल फोन पर जीएसटी बढ़ने से उद्योग का होगा नुकसान, रोजगार कम होंगे: आईसीईए

नयी दिल्ली। एजेंसी

आर्थिक सुस्ती और कोरोना वायरस के प्रभाव के बीच मोबाइल फोन पर जीएसटी दर को 12 से बढ़ाकर 18 प्रतिशत करने का उद्योग को नुकसान होगा और इसका रोजगार पर भी असर पड़ेगा। मोबाइल फोन उद्योग के संगठन आईसीईए ने रविवार को यह आशंका जाहिर की है। दि इंडियन सेल्युलर एण्ड इलेक्ट्रानिक्स एसोसियेसन (आईसीईए) ने मोबाइल फोन पर माल एवं सेवाकर (जीएसटी) बढ़ाने के जीएसटी परिषद के फैसले के एक दिन बाद यह प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उसने कहा है कि इस वृद्धि से आम आदमी पर 15,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा और 100 करोड़ भारतीय उपभोक्ताओं पर इसका प्रतिकूल प्रभाव होगा। आईसीईए चेयरमैन पंकज महेन्द्रू ने एक वक्तव्य में कहा, ''ऐसे समय जब कोरोना वायरस का डर फैला हुआ है, आर्थिक सुस्ती अपने चरम पर है, उपभोक्ता धारणा बुरी तरह प्रभावित है और शेयर बाजार तेजी से गिर रहा है, मोबाइल फोन पर जीएसटी बढ़ाना स्वाभाविक समझ के प्रतिकूल है और असंवेदनशील फैसला है। इसका रोजगार पर तुरंत असर पड़ेगा और विनिर्माण क्षेत्र में भविष्य की निवेश की संभावनाओं पर बुरा असर होगा।'' उन्होंने कहा कि जून 2017 तक उपभोक्ताओं को 4- 5 प्रतिशत की दर से मूल्य वर्धित कर (वैट) और एक प्रतिशत की दर से उत्पाद शुल्क देना होता था। इसके बाद उन पर 12 प्रतिशत की दर से जीएसटी लगा दिया गया जिसे अब और बढ़ाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया। महेन्द्रू ने कहा, ''18 प्रतिशत जीएसटी से बीसवीं सदी के बुरे दिन फिर लौट आयेंगे जब मोबाइल फोन का दो नंबर का कारोबार अपने चरम पर था और 90 प्रतिशत तक ऐसे फोन बिकते थे। जीएसटी दर बढ़ाने से सरकार के मोबाइल फोन विनिर्माण को बढ़ावा देने के वर्षों के प्रयासों को झटका लगेगा।''

कोरोना से बचाव: नोटों से रहें दूर, करें डिजिटल लेनदेन, आरबीआई ने ग्राहकों को दी सलाह

नई दिल्ली। एजेंसी

रिजर्व बैंक ने कोरोना वायरस से बचाव के लिए नोटों (नकदी) से दूर रहने की सलाह दी है। रिजर्व बैंक ने सोमवार को स्पष्ट कर दिया कि नोटों को संक्रमण से बचाने का कोई तरीका नहीं है। लोगों को नोटों के संपर्क से खुद ही बचना होगा। डिजिटल लेनदेन इसका सबसे बेहतर तरीका है। चीन, इटली और जापान में बैंक से निकले नोटों से भी कोरोना वायरस फैलने के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों को एडवायजरी जारी की है। इसे रिजर्व बैंक ने भी गंभीरता से लिया है। केंद्रीय बैंक ने सभी बैंकों को जनता को गैर-नकद डिजिटल भुगतान विकल्प के लिए प्रेरित करने को कहा है।

इस महामारी को रोकने के प्रयासों के तहत सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचने के लिए मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, कार्ड आदि जैसे ऑनलाइन चैनलों के माध्यम से घरों से डिजिटल भुगतान ही बेहतर विकल्प है। इससे नकदी को बार-बार छूने से बचा जा सकता है।

नोटों से हाथों में पहुंच रहा संक्रमण

इंस्टीट्यूट ऑफ जेनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी की रिपोर्ट में भी करेंसी नोटों से होने वाली गंभीर बीमारियों का जिक्र किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि नकदी के लेनदेन से वायरस एक स्थान से दूसरे स्थान पर और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में स्थानांतरित हो रहे हैं। 120 करेंसी नोटों की जांच में 86.4 फीसदी नोट संक्रमित पाए गए। ये नोट समाज के हर वर्ग के पास से एकत्र किए गए थे।

नकदी का इस्तेमाल कम करना संभव

नकदी से पूरी तरह दूरी बनाना भले ही संभव न हो लेकिन इसके इस्तेमाल को कम जरूर किया जा सकता है। नकदी का इस्तेमाल वहीं करें जहां डिजिटल भुगतान की गुंजाइश नहीं है। मजबूरी में फुटकर खरीद फरोख्त तो नकदी में ही करनी पड़ेगी, लेकिन बड़े भुगतान जैसे, बच्चों की फीस, तमाम तरह के बिलों का भुगतान, बड़ी खरीदारी के लिए डिजिटल भुगतान का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

नोटों से भी वायरस फैलने का खतरा है। कोरोना वायरस कई दिनों तक सतह पर एक्टिव रह सकता है। ऐसी स्थिति में लोगों के संक्रमित होने का बड़ा खतरा है। लिहाजा डिजिटल लेनदेन इस मायने में भी फायदेमंद है। रिजर्व बैंक एनईएफटी, आईएमपीएस, यूपीआई और बीबीपीएस फंड ट्रांसफर, वस्तुओं और सेवाओं की खरीद, बिलों के भुगतान आदि की सुविधा के लिए चौबीसों घंटे उपलब्ध है।

-योगेश दयाल, मुख्य महाप्रबंधक, रिजर्व बैंक

2000 रुपए का नोट बंद करने पर केंद्र सरकार की सफाई

नई दिल्ली। एजेंसी

केंद्र ने सोमवार को लोकसभा में कहा कि सरकार का 2000 रुपए के बैंक नोट को प्रचलन से वापस लेने का कोई प्रस्ताव नहीं है। वित्त राज्यमंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने लोकसभा में एक सवाल के लिखित जवाब में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार का 2000 रुपए के बैंक नोट को प्रचलन से वापस लेने का कोई प्रस्ताव नहीं है। उन्होंने साथ ही कहा कि अधिकतर 500 रुपए और 200 रुपए मूल्य वर्ग के बैंक नोट प्रचलन में हैं। इसको ध्यान में रखते हुए भारतीय स्टेट बैंक ने अपने स्थानीय मुख्यालयों को उक्त मूल्य वर्ग के करेंसी नोटों के अनुसार स्वचालित टेलर मशीनों (एटीएम) को पुनः नया स्वरूप देने के लिए सूचना जारी की है। तथापि अभी भी कई एटीएम में 2000 रुपए के करेंसी नोट वितरित हो रहे हैं।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक सचिन बंसल द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13, प्रेस काम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 18, सेक्टर-डी-2, सांवेर रोड, इंडस्ट्रीयल एरिया, जिला इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- सचिन बंसल

सूचना/चेतावनी- इंडियन प्लास्ट टाइम्स अखबार के पूरे या किसी भी भाग का उपयोग, पुनः प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना संपादक की अनुमति के करना वर्जित है। अखबार में छपे लेख या विज्ञापन का उद्देश्य सूचना और प्रस्तुतिकरण मात्र है। अखबार किसी भी प्रकार के लेख या विज्ञापन से किसी भी संस्थान की सिफारिश या समर्थन नहीं करता है। पाठक किसी भी व्यावसायिक गतिविधि के लिए स्वविवेक से निर्णय करें। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र इंदौर, मप्र रहेगा।